

## पाठ-२ अपराजिता - शिवानी

### शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
1. विलक्षण	असाधारण
2. विद्विन्न	विभक्त, टूटकर अलग होना
3. विधाता	ब्रह्मा, ईश्वर
4. अभिशप्त	शापग्रस्त
5. दक्षता	कुशलता
6. देवांगना	अप्सरा
7. सुगम	आसान
8. यातनाप्रद	कष्टदायक
9. पक्षाघात	लकवा
10. उर्जित	संग्रहित



## लघुप्रश्नोत्तर

प्र० 1 लेखिका ने अपराजिता किसे कहा है और क्यों ?

उ० लेखिका ने अपराजिता डॉ० चंद्रा को कहा है क्योंकि अपंगा होते हुए भी जीवन की कठिनाइयों से पराजित नहीं हुई।

प्र० 2 किसी को कार से उतरता देखकर लेखिका आश्चर्य-चकित क्यों हो गई ?

उ० एक युवती ने निजीब निचले धड़ को दक्षता से नीचे उतारा और बैसाखियों से व्हीलचेयर में स्वयं बैठकर अंदर गई यह सब देखकर लेखिका आश्चर्यचकित हो गई।

प्र० 3 लेखिका ने लड़की (चंद्रा) को देवांगना क्यों कहा ?

उ० अपंगा डॉ० चंद्रा के धैर्य एवं साहस की कहानी सुनकर लेखिका ने उन्हें देवांगना कहा।

प्र० 4 किन गुणों के कारण डॉ० चंद्रा की सफलता में विकलांगता बाधक नहीं हुई ?

उ० निष्ठा, धैर्य, साहस, आशावादिता, स-बावलंबन शक्ति, उत्साह आदि में विकलांगता बाधक नहीं हुई।



प्र० 5 चंद्रा पोलियो की चपेट में कब आई?

उ० बचपन में जब सामान्य ज्वर के चौथे दिन उसे पक्षाघात हो गया।

प्र० 6 चंद्रा ने कैसी कार का नक्शा बनाया?

उ० एक ऐसी कार जिसमें डॉ० चंद्रा अपने पैरों के निजीव अस्तित्व को सजीव बना सकेंगी।



## विचारात्मक प्रश्नोत्तर

प्र० डॉ० चंद्रा का कार से उतरकर कोठी में पहुँचने की तुलना मशीन से क्यों की ?

उ० डॉ० चंद्रा का कार से उतरना, एक प्रौढ़ा का व्हील-चेयर निकालकर रखना, स्वयं बिना किसी सहारे के अपने निजीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारकर बैसाखियों से ही व्हील-चेयर तक पहुँचना, बैठना और कोठी तक पहुँचना सब कुछ वैसा ही था जैसे कोई मशीन खटखटाती अपना काम कर रही है।

प्र० 2 'मुझे कोई सामान्य-सा सहारा भी न दे' यह उक्ति चंद्रा के किस गुण को प्रकट करती है ?

उ० यह उक्ति डॉ० चंद्रा के स्वावलंबन को प्रकट करती है। वे स्वयं सिद्धा है जिन्हें अपना सारा काम स्वयं करना पसंद है अपनी माँ को भी वे कार चलाकर परेशान नहीं करना चाहती हैं। उन्होंने अपनी प्रयोगशाला में भी अपना संचालन सुगम बना लिया।

प्र० 3 लैखिका ने साहिष्णु महिला किसे कहा और क्यों ?



उ०-3 लेखिका ने डॉ० चंद्रा की अद्भुत सहायी जननी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम को सहिष्णु महिला कहा है क्योंकि न केवल कठिन साधना की अपितु उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

प्र० 4 डॉ० चंद्रा के चरित्र की तीन विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ० डॉ० चंद्रा मेधावी, स्वयंसेविका, उत्साही, आशावादी और हँसमुख महिला हैं। वे हमेशा मेधावी दायरा सिद्ध हुई। उन्होंने शारीरिक अपंगता के बावजूद पहले बी० एस० सी फिर एम० एस० सी की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वे आत्मनिर्भर बनकर जीना चाहती हैं। वे कहती हैं, "मैं चाहती हूँ कि कोई सामान्य-सा सहारा भी न दे।" अतः वे स्वयं सिद्धा हैं। जीवन की इतनी कठिनाइयों के बाद भी वे हँसती रहती हैं। वे हँसमुख और आशावादी हैं।

प्र० 5 लेखिका को चंद्रा की समानता राणा साँगा में क्यों नज़र आती है?

उ० लेदर जैकेट से कठिन जिरह-बखतर में चंद्रा को देख लेखिका को युद्ध क्षेत्र में डूटे राणा साँगा का स्मरण हो आया था, क्योंकि इसका शरीर क्षत-विक्षत और मुख आभापूर्ण हँसता हुआ था।



(6)

प्र० 6 डॉ० चंद्रा को क्या-क्या उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं ?

उ० डॉ० चंद्रा ने प्राणिशास्त्र में बी० एस० सी की तथा एम० एस० सी में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीते गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। 1976 में माइक्रोबायोलॉजी में अपंग स्त्री-पुरुषों में डॉक्टरेट की डिग्री पाने वाली प्रथम भारतीय हैं।